IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 5.731

Volume 11, Issue 1, November 2021

वेदो एवं उपनिषदों मे भारतीय दर्शन व ज्ञान विज्ञान

Dr. Suman Lata
Assistant Professor, Department of Sanskrit
Ch. Devi Lal Memorial Girls PG College, Sewah, Panipat, Haryana

सारांश:"विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति विचारयति सर्वे मनुष्याः सत्यविद्या चे वा तथा विध्वामस्वश्च भवन्ति ते वेदाः।" अर्थात् जिनके द्वारा सारी सत्यविद्याएँ जानी या प्राप्त की जाती है । तथा जिनसे विद्वानों का ज्ञान होता है। वे वेद कहलाते है।

मूलशब्द-. वेद, उपनिषद,भारत,एदर्शनशास्त्रए,पुराण

उपनिषद-उपनिषद शब्द उप और नि उपसर्ग पूर्वक, ष्षदल मे क्विप प्रत्यय लगाकर निष्पन है। उपनि और षडल का अर्थ क्रमशः समाय. निश्चयपूर्वक तथा बैठना है है। अतः उपनिषद् का अर्थ है। गुरु के समीय विनम्तापूर्वक बेठकर ज्ञान की प्राप्ति करना।

अथर्ववेद भारतीय अनुभूति का मधुरस हैनिस्संदेह इसके पूर्व ऋग्वेद मे दर्शन और विज्ञान के ज्ञान अभिलेख है। प्रकति के प्रति गहन जिज्ञासा है। मनुष्य की आनादित करने वाली जीवन द्रष्टि है अर्थवेद के द्रष्टा ऋषिओ, कवियो के पास ऋग्वेद की पूर्व सचति ज्ञान निधि है। अथर्ववेद के ऋषि उस विधि से लाभ उठाने मे कोई संकोच नही करते। वे ऋग्वेद के तमाम मंत्रो को मूल रुप मे ही प्रयोग करते है। ऋग्वेद भारतीय संस्कृति की काव्य अभिव्यक्ति का प्रथम चरण है। अथर्ववेद के रचनाकारो के पास भारतीय दर्शन व ज्ञान. विज्ञान की समृद्ध परंपरा है। अथर्ववेद भरा-पूरा जीवन संगीत है। सांसारिक सुखायमान के विवरण है। इनके संयमन नियमन की जीवन दृष्टि है। संसार के प्रती आत्मियता है। जीवन की प्रति उल्लास है। ऋषि 100 वर्ष के जीवन की इच्छा बार-बार दोहराते है।

वे 100 वर्ष स्वस्थ रहना चाहते है। इसके लिए वे तमाम रोगो की औषधियाँ खोजते है।वे सहस्त्रो रोगो व उनके उपचार की औषधियों से सुपरिचित है वे परिवार के प्रति राग रखते है। परिवार के प्रति कर्तव्य पालन की मजबूत अनुशासन रेखा खिंचते है। उनका परिवार भाव पृथ्वी से अंतरिक्ष तक व्यापक है। पृथ्वी माता है अथर्ववेद के ऋषि के लिए इस माता का परिवार बडा है। औषधियाँ,

वनस्पतियो नदियाँ और समुद्र पर्वत पृथ्वी का भाग है। और सभी जीव भी कवि पृथ्वी परिवार के सभी सदस्यों के प्रति आत्मीय भाव रखते है। निस्संदेह अर्थववेद मे देवोपासना है देवता अनेक है।लेकिन वे अपने प्रिय देव के आकार व प्रभाव की सीमा को बढाते- बढाते असीम कार्य करते है। एक परम सत्य उनकी जांची परखी अनुभुती है। सो वे बहु देववादी नही है।वे दर्शन की तमाम धाराओ के याची है अथर्ववेद की मूलधारा पुरूषार्थ है ।ऋषि कवि स्ंवय के कर्म पर विश्वास करते है देव उपासना उन्हे नियातवादी नही बनाती देवता भी कर्म करते है। देवराज इन्द्र भी अपने पौरुष पराक्रम के कारण स्तुतियो और सत्कार पाते है। संवेदनशील समाजों के अर्थतंत्र मे वर्ग संघर्ष नही होते अथर्व वैदिक काल के द्रष्टा कवियो ने एक संवेदनशील संस्कृती का विकास किया है।

वैज्ञानिक विवैक और दर्शन से विकसित यह संस्कृत लोक मंगल प्रतिबद्ध है भारत दुनिया का सबसे बडा जनतंत्र है भारत ने अपने सविधान की रचना 1949 को संसदीय जनतंत्र अपनाया भारत की 130 करोड जनसंख्या संसदीय जनतंत्र से प्रतिबद्ध है यहा तर्क और विमर्श आधारित जनतंत्र की परंपरा का विकास ऋग्वैदीक काल के समाज ने किया। ऋग्वैद मे सभी समितियां के उल्लेख है। ऋग्वैदिक जनतंत्र की संस्कृति का विकास अथर्ववेद मे ही है। अर्थववेद की सभा और समिति में सभासद है। उन्हें सांसद भी कहा गया है। महाभारत की रचना अर्थववेद के बाद की है। महाभारत में समापर्व है। यहाँ बात अलग है महाभारत में सभा की शक्ति घटी है। सभा युद्ध रौकने में विफल रही है।

यरोपीय राष्ट्रवाद से भारतीय राष्ट्रवाद भिन्न है। ऋग्वेद का राष्ट्रवाद सांस्कृतिक है। अर्थववेद के राष्ट्रवाद में ऋग्वेद की सांस्कृतिक भावना है। अर्थववेद में राष्ट्र का राजनैतिक ईकाई के रुप भी मजबूत आधार दीया गया है। अर्थववेद के ऋषि जन कल्याण के ध्येय में डूबकर श्रम करते है। ऋषि के अनुसार इस तय श्रम से राष्ट्र का ओझ तेज व बल जन्म लेता है। सरकार राष्ट्र नही बनाती है। अर्थववेद के अग्रजो व पुर्वजो निरन्त श्रम किया है। समाज के उनके जीवन मूल्य है। वे स्वयं इसी तय मार्ग पर चले। साथ-साथ रहने के कारण भूमि के प्रति माता का भाव बढा। ऋषियों ने भूमि के प्रतिष्ठा के गीत गाए। सहुमना जीवन से समुचित संस्कृति का विकास हुआ। यही भारत का राष्ट्रगीत बना। अर्थववेद राष्ट्रीय एकता व सम्पूर्ण विश्व की समृद्धि का ऋषि प्रदात् उपहार है। ऋग्वेद में शासन व्यवस्था का विस्तृत वर्णन नही है। अर्थववेद में विश्व इतिहास में पहली बार शासन प्रणाली राजव्यवस्था व भौतिक संसाधनों का व्यापक उल्लेख हुआ है।

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

IJARSCT

Impact Factor: 5.731

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Volume 11, Issue 1, November 2021

वेद मानव सभ्यता के लगभग सबसे पुराने लिखित दस्तावेज हैं। वेदों की 28 हजार पांडुलिपियां भारत में पुणे के 'भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट' में रखी हुई हैं। इनमें से ऋग्वेद की 30 पांडुलिपियां बहुत ही महत्वपूर्ण हैं जिन्हें यूनेस्को ने विश्व विरासत सूची में शामिल किया है। यूनेस्को ने ऋग्वेद की 1800 से 1500 ई.पू. की 30 पांडुलिपियों को सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में शामिल किया है। उल्लेखनीय है कि यूनेस्को की 158 सूची में भारत की महत्वपूर्ण पांडुलिपियों की सूची 38 है। चार ऋषि ने सुने वेद...

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्र्यं ब्रहम सनातनम।> दुदोह यज्ञसिध्यर्थमृगयु: समलक्षणम्॥ -मनु (1/13) जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न कर अग्नि आदि चारों ऋषियों के द्वारा चारों वेद ब्रहमा को प्राप्त कराए उस ब्रहमा ने अग्नि, वायु, आदित्य और (तु अर्थात) अंगिरा से ऋग, यजुः, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।

वेदों को चार भागों में बांटा गया है:

- **ऋग्वेद:** ज्यादातर देवताओं इंद्र, अग्नि और सोम जैसे देवताओ का आहवाहन करने के लिए मंत्रो और स्त्रोत्र के बारे में वर्णन किया गया है। गायत्री मंत्र का उल्लेख इसी वेद में मिलता है। तथा विविध औषधियों का उल्लेख भी इसी ऋग्वेद में मिलता है।
- **यजुर्वेद:** इसमें यग्नो और हवनो का विधान मिलता है। अश्वमेघ यग्न जैसे यग्नो का उल्लेख भी इसी ग्रंथ में मिलता है।
- **साम वेद:** साम का अर्थ रूपांतरण कह सकते है। इसमें संगीत यानि गायन के माध्यम को महत्व दिया गया है। इसमें ज़्यादातर मंत्रो का उल्लेख ऋग्वेद से ही लिया गया है। इंद्र देव और अग्नि देव के बारे में वर्णन मिलता है।
- **अथर्व वेद:** सांसारिक महत्वाकांक्षाओं के लिए जादू मंत्र, जैसे तंत्र मंत्र के साथ चमत्कार, रहस्यमय क्रिया का इस ग्रंथ में उल्लेख मिलता है। माना जाता है कि यह वेद उपरोक्त तीनों से काफी बाद में लिखा गया था।

उपरोक्त भाग में से प्रत्येक में दो खंड होते हैं - संहिता, जिसका अर्थ है भजन और ब्राहमण, जो इन भजनों को बताता है, और निर्देश देता है कि उनका उपयोग कैसे और कब करना है। वेदों में चार अति महत्वपूर्ण वक्तव्य हैं। इन्हें महावैयाया या बड़े-बड़े वाक्य कहा जाता है। इन

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

IJARSCT
Impact Factor: 5.731

Volume 11, Issue 1, November 2021

चार में से तीन हर आत्मा की दिव्यता की बात करते हैं और चौथा परमात्मा के स्वरूप की बात करता है।

उपनिषदः

उपनिषदों को वेदांता भी कहा जाता है, और वे दार्शनिक, आध्यात्मिक और वैदिक दर्शन का सार हैं। आज उपलब्ध 108 उपनिषदों में से निम्नलिखित सबसे लोकप्रिय हैं:

(१) ईश उपनिषद,

(२) ऐतरेय उपनिषद

(३) कठ उपनिषद

(४) केन उपनिषद

(५) छान्दोग्य उपनिषद

(६) प्रश्न उपनिषद

(७) तैत्तिरीय उपनिषद

(८) बृहदारण्यक उपनिषद

(९) मांडूक्य उपनिषद और

(१०) मुण्डक उपनिषद।

उन्होने निम्न तीन को प्रमाण कोटि में रखा है-

(१) श्वेताश्वतर

(२) कौषीतकि तथा

(३) मैत्रायणी।

शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य। माधवाचार्य और वल्लभाचार्य ने हमेशा उपनिषदों को पवित्र ज्ञान ग्रंथ के रूप में माना है। और उनकी व्याख्या की है ताकि उन्हें अपने सिद्धांतों के अनुरूप बनाया जा सके।

सामान्य विशेषताएँ -

भारत के दार्शनिक सम्प्रदाय की चर्चा करते समय हम लोगो ने देखा है कि वेदो की प्रमाणिक मानने वाले आस्तिक तथा वेदों की प्रमाणि त मानने वाले दर्शन को नास्तिक कहा जाता है। कुछ सिद्धान्तों की प्राथमिकता प्रत्येक दर्शन में उपलब्ध है। साक्ष्य का कारण प्रत्येक दर्शन के विकास एक ही भारतकृत में हुआ है यह कहा जा सकता है। एक ही देश में पनपने के कारण इन दर्शनों पर भारतीय प्रतिष्ठा निष्ठा और संस्कृति की छाप अमिट रुप से पड़ गई है। इस प्रकार भारत के दर्शनों में जो साम्य दिखाई पड़ते है। उन्हें भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ कहा जाता है। इसलिए इस विशेषताएँ भारतीय विचारधारा के स्वरुप को पूर्णतया प्रकाशित करने में समर्थ है। इसलिए इन विशेषताओं का भारतीय दर्शन में अत्याधिक महत्व है।

विभिन्न आध्यात्मिक विषयो को जानने के लिए जब ऋषियों ने एकांत में ध्यान योग से निदिध्यासन् किया तो उन्होंने एक देवात्म शक्ति को देखा जो संसार का नियमन करती है। इसी शक्ति को उन्होंने इसे भ्रम कह कर पुकारा । उपनिषदों का ब्रहम शुद्ध , नित्य अजर- अमर और सनातन है। सामान्य प्रयत्न में भक्त ही वेदत्रयी शब्द रहा है। जिसमे अर्थववेद की गणना नही की गई है तथापि अर्थववेद का महत्व शेष तीनों वेदौ से अधिक रहा है। यह सर्वसिद्ध है।

अतिथी का सम्मान भारतीय जीवनशैली के सर्वोत्तम गद्य है। अर्थववेद के ऋषियों ने ही अतिथी सत्कार की जीवनशैली का विकास किया । अर्थववेद सार्वजनिक सर्वकालिक वेद है इसमें समाज के सभी वर्गो का मार्गदर्शन करने वाले सुत्र विद्यमान् है। अर्थववेद में कुल 20 काण्ड 723 सुफ्त कुल मंत्र 5987 है। अर्थववेद के 9वें काण्ड में अतिथी सम्मान पर 6 सुफ्त है। तब यज्ञ सर्वाधित पूर्ण काव्य था। यहाँ अतिथी सत्कार को यज्ञकर्म बताया गया है। अतिथी का दर्शन भी यज्ञ दर्शन है। ग्रहस्त अतिथि को वैसे देखते है जैसे देवत्व सम्प्रदाय के यज्ञ को देखते है अतिथि घर आते है उनसे ज्ञान विज्ञान की चर्चा होती है अतिथी से वार्ता करना यज्ञ कार्य में दिक्षीत होना है। अर्थववेद में घर आए अतिथी से पूर्व भोजन करना गलत बताया गया है। अर्थववेद अतिथी सत्कार के आदर्श आचार संहिता का प्रेरक है।

“अतिथी देवोः भव्”।

वैद कालिनी ज्ञान और विज्ञान की समस्त शाखाओं का सम्पूर्ण विविचन करने के कारण अर्थववेद को उस समय का विश्वकोष कहा जाता है। अर्थववेद में ज्ञान विज्ञान की प्रतिष्ठा है। यहा

आचार्य ज्ञानदाता वे अपने आरण के द्वारा भी विद्यार्थी को प्रबुद्ध बनाते है। राष्ट्र के लिए सुुयोग्य व उत्तम नागरिक तैयार करना तत्कालीन शिक्षा व आर्चाय का उद्देश्य है। अर्थववेद में कहते है कि आचार्य यम है। वह वरुण व सोमदेव जैसा है। एक मंत्र के अनुुसार भ्रम चर्चा से युक्त विद्यार्थी आचार्य बनता है। आचार्य ज्ञान निष्ठ शिष्य की कामना करता है। ऐसे भ्रम ज्ञानी शासक राष्ट्र की रक्षा करते है और वैदिक युग प्रचलित अन्धविश्वास जादू , टोना - टोटका अभिचार , वंशीकरण आदी से बचने के उपाय का वर्णन अर्थववेद में है जिससे उनके बूरे प्रभाव से बचाएजा सकें।

वैद कालिनी सभ्यता और संस्कृति का सम्पूर्ण और सर्वागिण चित्र हमारे समक्ष अर्थववेद ही उपस्थित करता है।

सन्दर्भ सूचि:-

1. महर्षिवाल्मीकि
2. महर्षि वेदव्यास
3. भामद्र (5वीं - 6वीं सदी)
4. आनन्द वर्धन (9वीं - 10वीं सदी)
5. भूम्मट (दसम् सदी)
6. देववाणी नई दिल्ली से प्रकाशन , भारत में भारतम पंचम भाग
7. "उपनिषद क्या हैं, आइए समझें". मूल से2 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 सितंबर 2019.
8. Original Sanskrit Texts By Mr. Muir Vol. II, Page 387
9. Original Sanskrit Texts Vol. II (Writer - Muir)
10. पाठ्यपुस्तक प्राचीन भारत, पाठ वैदिक युग का जीवन, दिल्ली सन् १९८६